aiiea

सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

cziea

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती
महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 11/2019
दिनांक : 09/12/2019

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

सीजेडआईईए का दसवां महाधिवेशन

विषय : चुनौतियों का मुकाबला करने संगठन को संगठित करो।

जाए ,

सीजेडआईईए के दसवें सम्मेलन ने मौजूदा चुनौतियों को चुनौती देने व उसका मुकाबला करने के लिए संगठन के समस्त कमियों को दुरुस्त कर संगठन को हर किस्म से सुदृढ़ बनाने संगठित करने का आव्हान किया। सम्मेलन के प्रतिनिधि सत्र में व्यापक विमर्श के बाद लिये गए प्रमुख निर्णय का विवरण निम्नानुसार है–

दिशासूचक प्रतिनिधि सत्र :

24 नवंबर की प्रात: से आरंभ हुए प्रतिनिधिसत्र की प्रभावपूर्ण कार्यवाही ने अगले 3 वर्षों के लिए सीजेडआईईए के संगठन व आंदोलन की दिशा को निर्धारित कर दिया। अधिवेशन के संचालन हेतु विभिन्न समितियों के गठन के साथ प्रतिनिधि सत्र की कार्यवाही आरंभ हुई। इसके पश्चात संगठन के महासचिव ने कार्यकारिणी समिति की ओर से प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। 71 पृष्ठों का प्रतिवेदन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति, राष्ट्रीय परिस्थिति, उद्योग की स्थिति, संगठन, हमारी कमजोरियां एवं भावी जिम्मेदारियों जैसे शीर्षकों में प्रस्तुत किया गया था। इस प्रतिवेदन ने विस्तार से देश व दुनिया के मेहनतकश आंदालनों की चर्चा करते हुए मध्य क्षेत्र के बीमाकर्मी आंदोलन व संगठन को एआईआईईए के दिशा–निर्देशों के अनुरूप सशक्त बनाने गंभीर विचार–विमर्श की जरूरत को रेखांकित किया।

प्रो. प्रभात पटनायकका विशेष उद्‌बोधन :

प्रतिनिधि सत्र के दौरान प्रो. प्रभात पटनायक के विशेष उद्‌बोधन का आयोजन किया गया। 'उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष के दौरान भारत में राष्ट्रीयता का उदय एवं विकास तथा मिलीजुली संस्कृति' विषय पर प्रो. पटनायक ने न केवल विशेष सत्र को संबोधित किया वरन् प्रश्नकाल के माध्यम से प्रतिनिधियों व प्रेक्षकों की जिज्ञासाओं को भी शांत किया। इस सत्र में प्रो. पटनायक ने बताया कि हमारे देश में सूफी एवं भक्ति आंदोलन के दौरान मीरा, रसखान, खुसरो, कबीर जैसे संतों के लेखन से क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा मिला। इससे क्षेत्रीय, भाषाई समूह उभरकर आये तथा राष्ट्रीयता की भावना आगे बढ़ी। तमिल, तेलगू, उड़िया, पंजाबी, मराठी, राष्ट्रीयता का भक्ति आंदोलन के दौरान अत्यधिक प्रचार हुआ। लेकिन हम सब एक देश में रहते हैं यह भारतीय चेतना उत्पन्न नहीं हुई थी। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने 'इंडिया' याने 'भारत' की अवधारणा को प्रबल किया। रेल्वे व उद्योगों के विकास ने देश के लोगों को एक–दूसरे से जोड़ा। पूंजीवादी विकास से जनता में गतिशीलता आई तथा साहित्य व संस्कृति का आदान–प्रदान हुआ। उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष में भारतीयता की चेतना का विकास हुआ। अत: प्रत्येक हिन्दुस्तानी में क्षेत्रीयता व राष्ट्रीयता दोनों की चेतना विद्यमान है। इन दोनों चेतनाओं में संतुलन कायम रखना होगा। उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन इस मुद्दे पर सचेत था। आजादी के बाद हमारे देश में संघीय चरित्र वाली सरकार का प्रावधान किया गया। राज्य व केन्द्र सरकार के कार्यक्षेत्र विभाजित हैं। राष्ट्रीय आंदोलन ने क्षेत्रीयता को समायोजित किया था। अत: हमारे देश में सामंजस्यपूर्ण लोकतंत्र का विकास हुआ। लेकिन हिन्दुत्ववादी हिन्दू राष्ट्रवाद की धारणा इस भारतीयता के ठीक विपरीत है। उन्होंने हिन्दू धर्म व हिन्दुत्व के फर्क को स्पष्ट किया और कहा कि हिन्दू धर्म भिन्न है और हिन्दुत्व एक राजनीतिक विषय है। हिन्दुत्ववादी राष्ट्रवाद नाजी जर्मनी की घटनाक्रमों के समानांतर घटनाक्रम है। इससे हमारे देश में एकाधिकार, पूंजीवाद एवं फासीवाद को बढ़ावा मिला है। जीएसटी के एक राष्ट्र एक टैक्स के नारे से राज्यों के अधिकारों का हनन हुआ है। यह कार्य जनवाद विरोधी है। उन्होंने कहा कि प्रदेश विधानसभा में प्रस्ताव पारित किये बिना धारा 370 को हटाया जाना पूर्णत: संविधान विरोधी कदम है। नवउदारवाद के दौर में संविधान पर हमले एवं विभाजनकारी चालों दोनों को परास्त करना होगा। इस सत्र में प्रतिनिधियों व प्रेक्षकों द्वारा उठाये गये प्रश्नों का जवाब देते हुए प्रो. पटनायक ने कहा कि ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता के रूप में हमें सांप्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठानी होगी ताकि मेहनतकश वर्ग में विभाजन के खिलाफ निरंतर सचेत लड़ाई जारी रखी जा सके।

प्रतिनिधि सत्र में जारी बहस में हस्तक्षेत करते हुए एआईआईईए के सहसचिव काम. श्रीकांत मिश्र ने कहा कि सीजेडआईईए का

अधिवेशन मेरे लिए ट्रेड यूनियन को सीखने की पाठशाला है। हमारे अधिवेशन में संगठन का मूल्यांकन पूरी ईमानदारी से होता है। यदि राष्ट्रीयकृत उद्योगों के निजीकरण के दौर में एलआईसी सुरक्षित है, छंटनी के दौर में 8000 नई भर्तियां हो रही हैं, परिभाषित पेंशन पर दुनिया भर में जारी हमलों के बीच हम पेंशन का अंतिम विकल्प हासिल कर रहे हैं तो उसका यही कारण है कि परिस्थितियों के सटीक मूल्यांकन में एआईआईईए दक्ष है। बीमाकर्मी सारे बड़े-बड़े कार्य करते हैं और बड़े संघर्षों को अंजाम देते हैं क्योंकि बाकी लोगों को जो असंभव लगता है उसे एआईआईईए संभव बना देती है। प्रतिनिधि सत्र को संबोधित करते हुए एआईआईईए के कोषाध्यक्ष काम. बी.एस. रवि ने कहा कि सीजेडआईईए सबसे छोटी जोनल इकाई होने के बावजूद कार्य में सबसे बड़ी है। एआईआईईए के विभिन्न अभियानों में सीजेडआईईए अन्य जोनल इकाइयों से आगे रहती है। उन्होंने कहा कि एआईआईईए के संघर्षों के चलते आज बीमा कर्मियों को बेहतर वेतन ,मेडिक्लेम, एलटीसी, पेंशन, अनुकंपा नियुक्ति, पेपर व मोबाइल बिल जैसी अनेकों सुविधाएं प्राप्त हैं जो उनके जीवन को सुखद बनाती हैं। सरकारी नीतियों के चलते वेतन पुनर्निर्धारण का संघर्ष कठिन होगा। अत: हमें संगठन को अधिक एकजुट व संघर्षों को धारदार बनाना होगा। इसी सत्र में एआईआईईए के महासचिव काम. व्ही. रमेश ने कहा कि एलआईसी की रक्षा करना हमारी वैचारिक प्रतिबद्धता है। एलआईसी की मजबूती की पृष्ठभूमि में एआईआईईए के अदृश्य हाथ हैं। हमारे उद्योग पर जारी हमलों के दौर में आज हमें बेहतर सेवा के साथ नये व्यवसाय में वृद्धि पर भी ध्यान केन्द्रित करना है। अत: विक्रय वाहिनी को सहयोग एवं प्रशिक्षण दिया जाना भी जरूरी है। एलआईसी देशभक्त संगठन है जो जनता के लिए जनता के पैसों से बना है तथा इसके द्वारा एकत्रित राशि राष्ट्र के निर्माण के कार्यों में लग रही है। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि जीवन बीमा सरकारी नियंत्रण में होना चाहिए ताकि दीर्घकालीन निवेशों का राष्ट्र के विकास में उपयोग किया जा सके। उन्होंने मोदी सरकार की कार्पोरेट परस्त नीतियों, श्रमिकों पर हमलों, सांप्रदायिकता, महंगाई, निजीकरण, बेरोजगारी का विस्तार से जिक्र करते हुए कहा कि संयुक्त श्रमिक संघर्षों को सशक्त बनाकर ही इन चुनौतियों का मुकाबला किया जाना संभव है। उन्होंने वेतन पुनर्निर्धारण के संघर्ष की भी विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि निश्चय ही हम जिसके हक़दार हैं वह प्राप्त करेंगे। काम. रमेश ने अपने प्रेरणादायक भाषण का समापन इन पंक्तियों के साथ किया-

'इस जुल्म के साये में जुबां खोलेगा कौन,
हम भी चुप रहेंगे तो फिर बोलेगा कौन।'

उन्होंने कहा कि एआईआईईए चुप नहीं रह सकती इसलिए संघर्षों को और तेज किया जाएगा।

प्रतिनिधिसत्र को सार्थक दिशा देते हुए एआईआईईए के अध्यक्ष काम. अमानुल्ला खान ने कहा कि वर्तमान आर्थिक संकट 1930 के महासंकट के बाद का सबसे बड़ा संकट है। 1930 के संकट ने द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया था। उसके बाद दुनिया भर में सरकारों ने लोक कल्याणकारी राज्य की दिशा में कदम बढ़ाते हुए रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, पेंशन की गारंटियां दीं। लेकिन आज पूरी दुनिया में सरकारें इन बिंदुओं पर खर्च कम करती जा रही हैं। इसके खिलाफ व्यापक आंदोलन निर्मित हो रहा है। पूंजीवादी विकास ने गंभीर पर्यावरणीय चुनौती खड़ी कर दी है। 200 वर्षों के बाद धरती पर जीवन बच पायेगा या नहीं यह प्रश्न उपस्थित हो गया है। भारत में अर्थव्यवस्था दबाव में है। केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण के अर्थशास्त्री पति का बयान आया है कि मोदी सरकार को अर्थशास्त्र का कोई ज्ञान नहीं है। आज भारत में खाद्यस्फीति है। प्याज, सब्जियों व अनाज के दाम तेजी से बढ़ रहे हैं लेकिन इसका लाभ किसानों को नहीं मिल रहा है। ग्रामीण भारत में बड़े पैमाने पर निवेश कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुधारने की जरूरत है। देश की श्रम शक्ति का 92 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में है। केन्द्र व राज्य सरकारों में 50 प्रतिशत से अधिक संख्या ठेका श्रमिकों की है। एआईएमएफ के निर्देशों पर वित्तीय घाटा को नियंत्रण में रखा जा रहा है। एलआईसी की प्रगति भारतीय अर्थव्यवस्था से जुड़ी हुई है। इस आर्थिक संकट के बावजूद एलआईसी ने 42 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। वित्तीय संकट में लोग सुरक्षित निवेश के माध्यम से बचत करना चाहते हैं अत: एलआईसी में निवेश जारी है। अत: बीमाकर्मियों को देश के मेहनतकशों के साथ मिलकर उन नवउदारवादी नीतियों के खिलाफ निर्णायक संघर्ष करना होगा जो नीतियां उनके जीवन और उद्योग दोनों को तबाह करना चाहती हैं। उन्होंने वेतन पुनर्निर्धारण पर हुई प्रगति का ब्यौरा देते हुए इसके यथाशीघ्र समाधान हेतु संघर्ष के लिए तैयार रहने का आव्हान किया और 8 जनवरी की हड़ताल की सफलता का आव्हान किया।

प्रतिनिधि सत्र को अपने ओजस्वी उद्बोधन से संबोधित करते हुए एआईआईईए के सहसचिव काम. बी. सान्याल ने कहा कि कभी भी पूंजीपतियों और मजदूरों का दृष्टिकोण एक नहीं हो सकता है। दोनों वर्गों के हित अलग हैं इसलिए उनकी राजनीति भी अलग होगी। हमारी राजनीति मेहनतकशों की राजनीति है। हमें मेहनतकशों के संयुक्त संघर्षों में पूरी ताकत व ईमानदारी के साथ शामिल होना होगा। धर्म का राजनीतिक इस्तेमाल होगा तो मेहनतकशों की एकता घटेगी। फिर हम लोग बीमाकर्मी के रूप में एकजुट नहीं रह पाएंगे। अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक सांप्रदायिकता आपस में मित्र है। दोनों एक-दूसरे को खाद और पानी मुहैया कराते हैं। विवेकानंद ने कहा था कि जो जीव से प्रेम करता है वही ईश्वर से प्रेम करता है। काम. सान्याल ने प्रत्येक स्तर पर

संगठन को सशक्त बनाने का आव्हान करते हुए कहा कि संगठन के निर्णयों को पूरी तरह लागू किया जाना चाहिए। हमारी सुविधाएं छीन नहीं ली जाएं और नये लाभ हासिल होते रहें इसलिए संगठन को ताकतवर बनाये रखना जरूरी है।

प्रतिनिधि सत्र में मध्य क्षेत्र के विभिन्न मंडलों से 35 साथियों ने बहस में हिस्सेदारी की। साथियों ने रिपोर्ट के प्रत्येक पहलुओं पर बात रखी एवं अपनी मंडलीय इकाई के संघर्षों के अनुभवों से रिपोर्ट को समृद्ध किया। बहस का मुख्य जोर आत्मविश्वास एवं प्रतिबद्धता के साथ प्रत्येक मोर्चे पर संगठन को मजबूत करते हुए भावी संघर्षों को विशेषकर 8 जनवरी की हड़ताल को मध्य क्षेत्र में भारी सफलता प्रदान किये जाने पर केन्द्रित था। इसके अलावा पेंशन व नई भर्ती के मुद्दे पर मिली अभूतपूर्व सफलता को साथियों के मध्य पूरी तरह से ले जाने तथा नये आने वाले शत-प्रतिशत साथियों को संगठन की सदस्यता प्रदान किये जाने पर भी चर्चा हुई। सीजेडआईईए के महासचिव द्वारा बहस का जवाब दिये जाने के पश्चात सदन ने सर्वसम्मति से प्रतिवेदन पारित किया।

सीजेडआईईए के कोषाध्यक्ष काम. बी.के. ठाकुर द्वारा सीजेडआईईए एवं आंदोलन की खबर की 3 वर्षों की आडिटेड रिपोर्ट सदन में रखी, जिसे सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया।

क्रिडेंशियल कमेटी के संयोजक का एस.के. लहरी ने सदन के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसे भी पारित किया गया।

आकर्षक सांस्कृतिक संध्या :

जबलपुर मंडल के साथियों द्वारा 24 एवं 25 नवंबर की संध्या आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गये थे। इसमें बीमा कर्मचारियों, परिवार के सदस्यों एवं प्रतिनिधियों व प्रेक्षकों ने शानदार प्रस्तुतियां दीं। जबलपुर शहर के कलाकारों द्वारा भी मनोरंजक कार्यक्रम देर रात तक प्रस्तुत किये गये। मुंशी प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाट्य प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केन्द्र रही।

पोस्टर प्रदर्शनी :

जबलपुर डिवीजन इंश्योरेंस एम्पलाईज यूनियन की सांगठनिक गतिविधियों की मधुर स्मृतियों को समेटे हुए एक पोस्टर प्रदर्शनी भी आयोजन स्थल पर लगाई गई थी। काम. अमानुल्ला खान ने इसका उद्घाटन किया।

प्रस्ताव :

सीजेडआईईए के 10वें महाधिवेशन में विभिन्न विषयों पर कुल 15 प्रस्ताव पारित किये गये। ये प्रस्ताव एआईआईईए को मान्यता देने, आर्थिक मोर्चे पर चौतरफा बदहाली के खिलाफ , बीमा संशोधन कानून 2015 वापस लेने, बीमा प्रीमियम पर जीएसटी समाप्त करने, अतिशीघ्र सार्थक वेतन पुनर्निर्धारण करने, सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार बहाल करने, नई खेल नीति वापस लेने, कृषि संकट हल करने, श्रम कानूनों में श्रमिक विरोधी परिवर्तनों व एनपीएस के विरोध में दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों व अल्पसंख्यकों पर बढ़ते हमलों व सांप्रदायिकता के खिलाफ महिलाओं पर बढ़ते हमलों के खिलाफ, बढ़ती महंगाई पर रोक लगाने, गहराते रोजगार संकट का समाधान करने, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों का विनिवेश बंद करने तथा संवैधानिक संस्थाओं व प्रजातंत्र पर हमलों के खिलाफ जैसे विषय पर केन्द्रित थे।

मुख्य निर्णय :

सम्मेलन के प्रमुख निर्णय निम्न हैं-

1. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर उनके दृष्टिकोण को प्रचारित करने प्रत्येक मंडल में एक सेमिनार किया जाए।
2. एआईआईईए द्वारा पूर्व में तय किये गये 4 विषयों पर प्रत्येक मंडल में अभियान जारी रखा जाए, इसमें पीएफआई को भी शामिल एवं सक्रिय किया जाए।
3. नई भर्ती को एआईआईईए की सदस्यता में परिवर्तित किया जाए।
4. 8 जनवरी 2020 की हड़ताल को पूरे मध्य क्षेत्र में शानदार रूप से सफल बनाया जाए। अन्य ट्रेड यूनियनों व जनसंगठनों के साथ संयुक्त रूप से इसकी तैयारी की जाए।
5. बीमा प्रीमियम पर जीएसटी समाप्त करने अभियान जारी रखा जाए।
6. उद्योग की देयक क्षमता के अनुरूप वेतन पुनर्निर्धारण के लिए एआईआईईए के संघर्ष को सफल बनाया जाए।
7. 19 जनवरी को एलआईसी के राष्ट्रीयकरण दिवस के रूप में नुक्कड़ सभा, पर्चा वितरण आदि कार्यक्रम किये जाएं।
8. अभिकर्ताओं के मध्य नियमित रूप से नव-व्यवसाय के प्रोत्साहन हेतु प्रतियोगिताओं व अन्य आयोजन जारी रखा जाएं।
9. नियमित रूप से सभी जगह ट्रेड यूनियन कक्षाएं आयोजित की जाए।
10. आंदोलन की खबर एवं इंश्योरेंस वर्कर की सदस्यता में वृद्धि की जाए तथा दोनों पत्रिकाओं हेतु विज्ञापन एकत्रीकरण किया जाए।
11. एआईआईईए के महाधिवेशन हेतु अधिकतम विज्ञापन एकत्रित किया जाए।
12. संगठन में प्रत्येक स्तर पर जनवादी कार्यप्रणाली सुनिश्चित की जाए।
13. पेंशन का अंतिम विकल्प हासिल किये जाने के पश्चात प्रत्येक पेंशनग्राही को एआईआईपीईए का सदस्य बनाया जाए। पेंशनर्स एसोसियेशन को प्रत्येक स्तर पर सक्रिय किया जाए।
14. पूरे मध्य क्षेत्र में इंश्यारेंस वर्कर एवं आंदोलन की खबर के सामूहिक पठन की परम्परा विकसित की जाए इस हेतु सभी इकाइयों में काम. एन.एम. सुंदरम् स्मृति स्टडी सर्किल प्रारंभ किया जाए।

नई कार्यकारिणी समिति :

अंत में सीजेडआईईए के 10वें महाधिवेशन ने 42 सदस्यीय नई कार्यकारिणी समिति का सर्वसम्मति से चुनाव किया। नया सचिव मंडल इस प्रकार है–

अध्यक्ष	:	काम. एन. चक्रवर्ती	जबलपुर
उपाध्यक्ष	:	काम. बी. सान्याल	रायपुर
		काम. टी.पी. पाण्डे	सतना
		काम. मुकेश भदौरिया	भोपाल
		काम. ऊषा परगनिहा	रायपुर
महासचिव	:	काम. डी.आर. महापात्र	रायपुर
सहसचिव	:	काम. पूषण भट्टाचार्य	भोपाल
		काम. व्ही.एस. बघेल	रायपुर
		काम. अतुल देशमुख	रायपुर
		काम. अजीत केतकर	इंदौर
		काम. राजेश शर्मा	बिलासपुर
		काम. ब्रजेश सिंह	ग्वालियर
		काम. विजय मलाजपुरे	जबलपुर
		काम. राणा मलिक	शहडोल
		काम. मंजू शील	भोपाल
कोषाध्यक्ष	:	काम. बी.के. ठाकुर	रायपुर
सह कोषाध्यक्ष	:	काम. डी.के. भगत	रायपुर

कार्यकारिणी समिति :

इसके अलावा 25 सदस्यीय कार्यकारिणी समिति एवं एआईआईईए के महाधिवेशन हेतु 29 प्रतिनिधियों का चुनाव भी सर्वसम्मति से संपन्न हुआ। जो इस प्रकार है–

1.	काम. गंगा साहू	:	रायपुर
2.	काम. गीता पंडित	:	रायपुर
3.	काम. ए. तिर्की	:	रायपुर
4.	काम. सुरेन्द्र शर्मा	:	रायपुर
5.	काम. जया डेकाटे	:	भोपाल
6.	काम. ओमप्रकाश डोंगरीवाल	:	भोपाल
7.	काम. रूपनारायण बाथम	:	भोपाल
8.	काम. रवि श्रीवास	:	बिलासपुर
9.	काम. गणेश कछवाहा	:	बिलासपुर
10.	काम. संगीता झा	:	बिलासपुर
11.	काम. सुधा पंताने	:	इंदौर
12.	काम.अनिल सुरवड़े	:	इंदौर
13.	काम. प्रशांत सोहले	:	इंदौर
14.	काम. पूरनसिंह कुशवाहा	:	ग्वालियर
15.	काम. जे.पी. आर्या	:	ग्वालियर
16.	काम. सुनीता सिंह	:	ग्वालियर
17.	काम. एस.के. गुप्ता	:	सतना
18.	काम. डी.एस. बघेल	:	सतना
19.	काम. मोनिका अवस्थी	:	सतना
20.	काम. आर.पी. गुप्ता	:	शहडोल
21.	काम. एस. दास	:	शहडोल
22.	काम. संगीता मलिक	:	शहडोल
23.	काम. गायत्री सूरी	:	जबलपुर
24.	काम. वंदना चौबे	:	जबलपुर
25.	काम. हीरालाल कुशवाहा	:	जबलपुर

जेडीआईईयू को लाल सलाम :

अधिवेशन के अंत में इसे अभूतपूर्व व ऐतिहासिक बनाने हेतु जेडीआईईयू के प्रत्येक साथियों के योगदान की प्रशंसा करते हुए समस्त प्रतिनिधियों व प्रेक्षकों की ओर से लाल सलाम के मध्य उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

आगामी अधिवेशन इंदौर में :

सीजेडआईईए के 11वें महाधिवेशन को इंदौर मंडल द्वारा आयोजित किये जाने के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए संगठन का ध्वज हर्षोल्लास के साथ इंदौर मंडल के साथियों को सौंपे जाने के साथ ही यह अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

साथियों, निश्चय ही मध्य क्षेत्र के साथी इन निर्णयों के अमल में पूरी शक्ति से जुटेंगे जिसके जरिये हम न केवल राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग की रक्षा करेंगे, बेहतर वेतन पुनर्निर्धारण हासिल करेंगे वरन् दुश्मन के हर आक्रमण का प्रतिकार करने अपनी संगठनात्मक धार को तेज करने अपनी एकता को सुदृढ़ बनायेंगे। इसी विश्वास के साथ...।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

महासचिव